रिकार्ड- इस पाप की दुनिया से:- ओमशान्ति प्रातःक्लास 23-1-68

ओमशान्ति। अभी मीठे2 रूहानी बच्चों को समझाया गया है इस समय है कलियुगी घोर-अंधियारा। यानि बुधि एकदम अंधियारे में है। अभी बच्चे शिवजयन्ति के लिए तैयारी कर रहे हैं। शिवजयन्ति सो गीता जयन्ति। अभी मनुष्यों की बुधि में तो कचड़ा भरा हुआ है। वह तो कृष्ण को ही भगवान समझते हैं। तो थोड़ी कड़े अक्षर लिखनी पड़े। यह साफ़ दिखाना है एक गीता भक्ति मार्ग की जो कृष्ण का नाम डाल झूठी बनाई है। क्योंकि सारा मदार गीता पर ही है। झूठी गीता पढ़ते2 सारा भारत गिर पड़ा है। बाप आकर सच्ची गीता सुनाते हैं। सारी सृष्टि का मदार है गीता पर। पतित-पावन भी गीता का भगवान ही कहेंगे। भारत का सारा मदार है गीता पर। इसलिए एक बात में ही बच्चों को विजय पानी है। क्योंकि यह है सब से अति ग्लानी। बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है। जिससे ही दुर्गति को पाया है। बाप भी गीता सुनाते है। यह है राजयोग। गीता सभी मनुष्य पढ़ते हैं। क्योंकि धर्मशास्त्र है ना। जैसे क्रिश्चन लोग बाईबुल पढ़ते हैं, छोटे2 चोपड़िया पाकेट में पड़ी रहती है। यही बातवेंगे क्राईस्ट ने क्रिश्चन धर्म रचा। बस। इसलिए ही बराई देते हैं। जैसे बुजुर्ग होकर गये हैं उन्हों को मान देते हैं ना। क्योंकि समझते हैं वह बड़े थे। खुद मान देने वाले तो गिरते जाते हैं। बड़ों को मान देते हैं। दुनिया पतित होती जाती है ना। तो कम पावर के ही जन्म लेते रहेंगे। फर्स्ट क्लास वाले सतयुग में जन्म लेंगे। जो पीछे जन्म लेते हैं वह कम पावर वाले कहे जायेंगे। फिर दिन प्रति दिन कम ताकत वाले होते जाते हैं। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में आते हैं ना। तो बाबा मुख्य बात जो कहते हैं तो उन पर बच्चों को पूरा ध्यान देना चाहिए। तुम बच्चे तो जानते हो भगवान ही हेविन स्थापन करते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। और भक्ति मार्ग में समझते हैं कृष्ण ने सिखाया। कहां वह बच्चा पूरे 84 जन्म लेने वाला कहां वह पुनर्जन्म रहित। कितना फर्क हो जाता है। तुमको बहुत अच्छी एडवरटाईज़मेन्ट करनी चाहिए। झूठी गीता पढ़ते2 तमोप्रधान बन गये हैं। बाप ने जो सच्ची गीता सुनाई वह तो राजयोग था। वह कोई राजयोग थोड़े ही सिखलाते। ऐसी युक्ति से पत्थर भारना चाहिए जो कहे यह बात आकर समझाओ। फिर समझाने वाले भी बड़े अच्छे चाहिए। समय अनुसार देखा जाता है। बच्चों में अभी योग की कमी है। विजय पा न सकेंगे। इसलिए तुमको टाईम आद मिलता ही नहीं है। क्योंकि बच्चों में योग का बल बहुत ही कम है। सारा मदार है योग पर। आधा कल्प देहभिमानी बने हैं तो एक जन्म देहीअभिमानी बनने में मेहनत लगती है। सच्चाई कम है। लिखते नहीं कि बाबाआप जो कहते हो वह बिलकुल राईट है। माया बड़ा चलायमान करती है। इसलिए चार्ट भी रखते नहीं। समझते हैं घंटा डेढ़ लिखें तो बाबा क्या कहेंगे। श्रीमत तो चलते ही नहीं। बाबा तो अन्य बच्चों के लिए समझाते हैं। कोई तो याद का अर्थ भी नहीं समझते। मुंझ जाते हैं। बिन्दी को कैसे याद करें। और यह तो बाबा है। बाबा को याद करना है। भक्ति मार्ग के लिए यह बड़ा रूप निमित्त बनाया है। तुम तो बाप को याद करो ना। ज्ञान तो बुधि में है ना। वह छोटी बिन्दी है। उनको याद करने से पाप विनाश होंगे। सीढ़ी में भी दिखाया है सतोप्रधान-फिर सतो रजो, तमो। फिर ऊपर चढ़ने का भी ऐसे ही है। ऐसे नहीं एक से सतोप्रधान बन जाते हैं। नहीं। पहले तमोप्रधान से तमो, फिर रजो, फिर सतो, सतोप्रधान। जितना2 जो याद करते हैं उतना ही ऊंच पद पाते हैं। जैसे मार्कस दी जाती है ना। यह है अंतिम जन्म। इनमें ही तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है। सारा दिन यही ख़यालात रहे किसको कैसे समझावें। भारतवासी भी सब तो सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी नहीं हैं। वैश्यवंशी, शुद्रवंशी भी मिक्स है। उन से सेपलिंग उनका ही लगेगा जो सूर्यवंशी थे। तो इसमें कितने डिफीकल्ट होती है। अपने को समझ सकते हैं। हम याद में रह नहीं सकते हो समझना चाहिए हम सतयुगी सूर्यवंशी नहीं बन सकेंगे। अर्थ ही नहीं समझते जैसे छोटे बच्चों को जैसे कहा जाता है शिव बाबाको याद करो परन्तु बुधि में समझ थोड़ी ही है कि याद करने

सतोप्रधान बनना है। इस ऊंच ज्ञान को समझ न सके। जिनको ऊपर आना ही नहीं है वह इन बातों को समझ न सके। योग में भी रह न सके। तो अभी यही सिध करना है शिवजयन्ति सो श्रीमत भगवान गीता जयन्ति। न कि कृष्ण जयन्ति सो गीता जयन्ति। झूठी गीता पढ़ते2 मनुष्य नीचे ही गिरते आये हैं। बाप की समझानी से कितना ऊपर चढ़ते हो। इस पर कैसे समझावें वह निकालना है। मनुष्य चमकेंगे। वह तो सहन करना है। युध का मैदान है ना। विघ्न से डरना न है। श्रीकृष्णभगवानुवाच की गीता जन्म-जन्मान्तर पढ़ते2 नीचे ही उतरते आये हैं। बाप तो एक ही बार सुनाते हैं जिससे गति सदगति हो जाती है। क्राईस्ट ने कौन सा बाईबल रचा। जो मुक्ति को पाये। कोई भी मुक्ति को पा न सके। मुक्ति को तब ही पावेंगे जब कि बाप आवेंगे। बाकी क्राईस्ट आद की तो कोई महिमा नहीं। क्या करते हैं, धर्म स्थापन किया, बोध को पाते रहते हैं। नीचे उतरते रहते हैं। तुम बच्चे तो स्वर्ग पराडाईज़ में रहते हो। वहां जाने लिए तुमको अभी मेहनत करनी पड़ रही है। बाबा हमेशा कहते हैं वह लोग क्या समझाते हैं यह भी तुमको देखना चाहिए। जैसे अरविन्दो घोष का आश्रम है, जाकर देखना चाहिए। अगर पूछते हैं तुम ब्रह्माकुमार/कुमारी हो? बोलो हम वहां भी गये हैं परन्तु अभी जांच करते रहते हैं सही रास्ता कौन सा है। मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज रास्ता कौन बता सकते हैं सो देखते हैं। यहां भी ऐसे बहुत जांच करने आते हैं। कोई और अच्छा रास्ता मिल जाये। तो जांच करनी चाहिए क्या2 सिखलाते हैं। तो फिर तुम अनुभवी हो कोई को भी समझाये सकेंगे। मुख्य बात है गीता की भगवान की। मनुष्य समझते हैं कृष्ण भगवानुवाचः। क्राईस्ट को थोड़े ही भगवान कहेंगे। बहुत भगवान थोड़े ही होंगे। तो साफ कर के जहां गीता पर समझाते हैं वहां जाये सुनना चाहिए। शिव जयन्ति में भी यही कृष्ण का चित्र (जिसमें दोनों गीता दिखाई है) यह बहुत बड़ा चित्र साथ में उठाना पड़े। तादुत कितने भी बड़े2 होते हैं। मुख्य बात ही यह है। वह गीता भक्ति मार्ग के दुर्गति की। जन्म-जन्मान्तर पढ़ते2 दुर्गति को पाया है। शिवबाबा जो गीता सुनाते हैं एक सेकन्ड में सदगति हो जाती है। पत्थर मारना है फिर भले रड़ियां मारो। बाबा ने कह दिया है चित्रशाला जो तुम्हारी है वह इनश्योर करा दो। पत्थर आदल गाने में देरी थोड़े ही करते हैं। मन्दर है ना। तुमको समझाना है। परन्तु योग का बल है नहीं। भल कितना भी अपने को अच्छा समझते हैं, बहुत अच्छा समझते हैं परन्तु तीर लगता ही नहीं। योग नहीं है। इसको कहा जाता है कुकुर ज्ञानी। (कुकुर का मिशाल) यह भी बांग भरते हैं फिर खुद भी विकार में गिर पड़ते हैं। यह है ही विकारियों की दुनिया। इनको निर्विकारी कौन बनावे। कृष्ण तो बना न सके। वह तो अभी संवरा अर्थात पतित है। वह कैसे गीता सुनावेंगे। यह कुछ भी जानता था क्या। बाबा ने आकर समझाया है। कितनी गुह्य= गुह्य बातें समझने को है। जिसका नाम दिया है वह यहां बैठा है। कृष्ण तो एक ही बार बनते हैं। फिर भिन्न2 नाम-रूप देश,-काल में हो जाता है। यह तो त्योहार आद जो सब भी मनाते हैं वह इस पुरुषोत्तम संगम युग की है। जो फिर भक्ति मार्ग में मनाई जाती है। इन बातों को मनुष्य तो समझ न सके। अभी तुम कितने समझदार बनते हो। तुम जानते हो आगे हम बेसमझ थे। अभी बाप द्वारा कितना समझा है। मुख्य तो गीता है ना। शिव जयन्ति तो आर्य-जी भी मनाते हैं। परन्तु शिव ने क्या आकर किया कुछ भी पता नहीं। अगर कोई शिव पुराण या कोई शास्त्र बनाया भी होगा तो भी झूठा। तुम समझते हो शिव बाबाने तो गीता ही सुनाई। बाकी सभी शास्त्र फाल्तू है। तुमको कहते हैं तुम शास्त्र को मानते हो। बोलो क्यों नहीं। हम जानते हैं यह सभी भक्ति मार्ग के सामग्री है। हम ने भक्ति करना छोड़ दिया है। शास्त्र पढ़ना भक्ति है। बाप ने कहा है यह जप-तप आद करने से मेरे साथ कोई नहीं मिलते। दिन प्रति दिन सीढ़ी नीचे ही उतरते जाते हैं। संगम पर ही बाप आकर सतोप्रधान बनाये पुरुषोत्तम बनाते हैं। सतोप्रधान भी सबको नहीं कहेंगे। एक्टर्स नम्बरवार होते हैं ना। सतयुग में भी नम्बरवार राजधानी होते हैं। भगवान आकर राजधानी

स्थापन करते हैं। कृष्ण नहीं। नई दुनिया कृष्ण थोड़े ही बनाते हैं। यह तो बाप का ही काम है। बाप जब आते हैं तब विनाश तो होता ही है। तुम समझते हो यह पुरानी दुनिया है। नईदुनिया के लिए हम राजयोग सिख रहे हैं। बुलाते भी हैं हे पतित-पावन आओ, आकर पावन दुनिया बनाओ। पावन दुनिया जरूर थोड़े ही मनुष्य होंगे। ड्रामा केपलेन अनुसार अभी पुरुषोत्तम संगम युग पर यह राजधानी स्थापन हो रही है। नर्क से फिर स्वर्ग कैसे बनाता है यह भी तुम ही जानते हो। यह गाड फादरली ~~युनिवर्सि~~ युनिवर्सिटी है। भगवानुवाच मैं तुमको मनुष्य से देवता बनाता हूं। एमआब्जेक्ट तो सामने है। तुम्हारी विजय होगी ही इस पाईन्ट पर। परन्तु पिछाड़ी में। तुम छड़ी नरम करते रहो। पत्थर बुधि को मुलायम बनाते हो। सोने की बुधि बनाते हो। तुम कारीगर कोई कम थोड़े ही हो। विश्वकर्मा ने सोने की दुनिया बनाई कारीगरी की है ना। विश्व का बाप ही यह कर्म कराये रहे हैं। करन-करावन हार है ना। बाप को ही विश्वकर्मा कहा जाये। सारे विश्व को पत्थर बुधि से पारस बुधि, नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप है। बच्चों से कराते हैं। नई दुनिया स्थापन करा रहे हैं। पुरानी जरूर विनाश हो जावेगी। तुम समझते हो आज नर्क है कल स्वर्ग होगा। फिर हम 84×94 का चक्र लगावेंगे। बुधि में चक्र याद है। कल की बात है। गीता को सिध करने में कितना टाईम लगता है। गीता है सभी शास्त्रों का माई-बाप। यह झूठी तो और सभी शास्त्र झूठे हो जाते हैं। रावण राज्य में सभी विकारी है। बाप आकर निर्विकारी दुनिया बनाते हैं। अक्षर कितने कड़े है। इस गीता से भारत वेश्यालय बना है। शिवबाबा आकर शिवालय बनाते हैं। पहले तो मनुष्य सुन कर गाली देंगे। अखबारों में डालेंगे। गवर्मेन्ट कहेगी इनको बन्द करो। बहुत धरथला मचाते हैं। तुम्हारी यह गुप्त चीज़ है ना। जब तुम बहुत हो जावेंगे तब ही आवाज़ होगा। बाप समझाते हैं ऐसे2 करो। परन्तु अइतनी ताकत नहीं है तो थोड़ा2 करते रहते हैं। सारी बात है ही गीता के भगवान पर। इसमें बड़ी बुधि चाहिए। बन्दर बुधि को देवता बनाना होता है। दूसरे धर्म वाले भी आने तो हैं ना। परन्तु पिछाड़ी में। नहीं तो तुम्हारे पास मच्छड़ों सदृश्य आये इकट्ठे हो जाये। कृष्ण तो हैं ही स्वर्ग वासी। भगवान हैं गुप्त। कृष्ण आये न एके। यह तो असम्भव बात है। आज कल तो झूठे कृष्ण भी बहुत बनाते हैं। कोई के चिकल आद अच्छे गुण अच्छे होते हैं तो वस सब की भावना वे० जाती है यह तो कृष्ण का अवतार है। उस ही भावना से जाते हैं तो सा० भी हो जाता है। कृष्ण से प्यार तो सभी का है ना। भावना का भाग मिल जाता है। परन्तु सच्चे की बेरी को लूडे बहुत आती है डूब कब नहीं सकती। यह हैं सच्चे की बेरी एकदम पार ले जाने वाले। यह कब डूब नहीं सकता। गवर्मेन्ट भी क्या कर सकेगी। यह तो गुप्त ज्ञान है ना। किसको मुख थोड़े ही बन्द करेंगे। धर्म की स्थापना तो जरूर होनी ही है। बाबा समझाते रहते हैं योग की बहुत कमी है। अपने को आत्मा समझो। दूसरे को भी ऐसे ही देखो। हम भाई2 को शिक्षा देते हैं। बाप हम बच्चों को देते हैं। हम फिर भाईयों को शिक्षा देते हैं। सभी आत्मायें भाई 2 हैं। यह नशा रहना चाहिए ना। और चलन भी अच्छा चाहिए। देखना है हमारा रजिस्टर तो खराब नहीं होता है। रजिस्टर रखना ही पड़े। टीचर को तो रजिस्टर चाहिए ना। झूठा चाट आद होगा तो झट पता पड़ जाता है। टीचर अच्छी रीत समझ सकते हैं। अपने को मियां मिठू कह न सके। आपे ही अपने को देखना है किसको दुःख तो नहीं दिया। इसमें योग की मुख्य बड़ी बात है। छोटे बच्चे तो इन गम्भीर बातों को समझ न सके। बाकी इन कविताओं में आद में कुछ रखा नहीं है। जो भक्ति मार्ग में होता है वह ज्ञान मार्ग में नहीं। बाप अक्षर ही दो देते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप को याद करनेसे वर्सा बुधि में आ जाता है। स्वर्ग में तो जरूर जावेंगे। बाकी पद पावेंगे अपने ही पुरुषार्थ पर। तुम जानते हो शिवबाबा हम सभी आत्माओं का बाप है। फिर आत्मा से परमात्मा हो न सके। आत्मायें तो अनेक हैं परमात्मा है एक। मनुष्य ही मुंझ पड़ते हैं। * ——— - - - - - आस्युपेशन का पता नहीं तो जैसे कि पत्थर की पूजा करते हैं।

*आखिरीन किसको याद करें। बच्चों को गुडमार्निंग।

ओमशान्ति।